प्रातः क्लास 3/12/68 ओम शान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओम शान्ति। रूहानी विचित्र बाप बैठ विचित्र बच्चों को समझाते हैं अर्थात् दूर देश के रहने वाला, जिसको परमपिता परमात्मा कहा जाता है, बहुत-2 दूर देश से आकर इस शरीर द्वारा तुमको पढ़ाते हैं। अभी जो पढ़ाते हैं, वह पढ़ाने वाले साथ योग तो ऑटोमैटिकली रखते हैं। कहना नहीं पड़ता है तो(कि) हे बच्चों! टीचर से योग रखो वा उनको याद करो। नहीं। इनके लिए कहते हैं हे रूहानी बच्चों, यह तुम्हारा बाप भी है, टीचर, गुरु भी है। उनके साथ योग रखो अर्थात उनको याद करो। वह है विचित्र। तुम घड़ी-2 उनको भूल जाते हो। इसलिए कहना पड़ता है पढ़ाने वाले को याद करने से तुम्हारे पाप भस्म हो जावेंगे। यह लॉ नहीं कहता जो टीचर कहे कि मेरे को देखो। इसमें तो बड़ा कायदा है। बाप कहते हैं सिर्फ मुझे याद करो। इस याद के बल से ही तुम्हारे पाप कटने हैं। इसको कहा जाता है याद की यात्रा। अभी रूहानी विचित्र बाप बच्चों को देखते हैं। बच्चे भी अपन को आत्मा समझ विचित्र बाप को ही याद करते हैं। तुम घड़ी-2 शरीर में आते हो, मैं तो सारा कल्प ही शरीर में नहीं आता हूँ। इस संगमयुग पर ही सिर्फ बहुत दूर देश से आता हूँ तुम बच्चों को पढ़ाने। यह अच्छी रीत याद करना है। बाबा हमारा बाप भी है, टीचर भी है और सद्गुरु भी है। विचित्र है। उनका अपना शरीर नहीं है। फिर आते कैसे हैं? कहते हैं मुझे प्रकृति का, मुख का आधार लेना पड़ता है। मैं तो विचित्र हूँ। तुम सभी चित्र वाले हो। मुझे रथ तो ज़रूर चाहिए ना। घोड़े, गधे का तो नहीं लेंगे। बाप कहते हैं मैं इस तन में प्रवेश करता हूँ। जो नम्बरवन है वही फिर नम्बर लास्ट बनते हैं। जो सतोप्रधान थे, वही तमोप्रधान बने हैं। तो उन्हों को ही फिर सतोप्रधान बनाने लिए बाप बैठ पढ़ाते हैं। समझाते हैं इस रावण राज्य में 5 विकारों पर जीत पहन, जगतजीत तुम बच्चों को बनना है। बच्चों को यह याद रखना है हमको विचित्र बाप पढ़ाते हैं। बाप को याद ही नहीं करेंगे तो पाप भस्म कैसे होंगे। यह बातें भी सिर्फ अभी तुम संगमयुग पर सुनते हो। एक बार जो कुछ होता है फिर कल्प बाद वही रिपीट होगा। कितनी अच्छी समझाते हैं। इसमें बहुत विशाल बुद्धि चाहिए। यह कोई साधु-संत आदि का सतसंग नहीं है। उनको बाप भी कहते हो, तो बच्चा भी कहते हो। तुम जानते हो यह हमारा बाप भी है, बच्चा भी है। हम सभी कुछ इस बच्चे को वर्सा देकर और बाप से 21 जन्मों के वर्सा लेते हैं। किचड़पट्टी हम सभी कुछ देकर और बाप से हम विश्व की बादशाही लेते हैं। कहते भी हैं हमको 5 बच्चे तो अपने हैं, बाकी 6 नम्बर शिवबाबा हमारा बच्चा है। अरे, यह तो बाबा है ना। फिर बच्चा कैसे कहते हो? जादूगर है ना। जो बाबा को अपना सच्चा(बच्चा) बनाते हैं। कहते हैं बाबा, हमने भक्तिमार्ग में कहा था बाबा आप आवेंगे तो हम आप पर तन-मन-धन से वारी जावेंगे। तो लौकिक बाप भी बच्चों पर वारी जाते हैं ना। तो यहाँ तुमको ऐसा विचित्र बाप मिला है, उनको याद करो तो तुम्हारे पाप भस्म हों और अपने घर चले जावेंगे। कितनी लम्बी मुसाफिरी है। बाप आते देखो कहाँ हैं, पराये रावण राज्य में। कहते हैं मेरे तकदीर में पावन शरीर मिलना ही नहीं है। पतितों को पावन बनाने कैसे आवें? हमको ही पतित दुनिया में आकर सभी को पावन बनाना पड़ता है। तो ऐसे टीचर का कदर भी रखना चाहिए ना। बहुत हैं जो कदर जानते ही नहीं। यह भी ड्रामा में होना ही है। राजधानी में सभी चाहिए ना नम्बरवार। तो सभी प्रकार के यहाँ ही बनने हैं। कम दर्जा पाने वाले का यह ख्याल होगा, न पढ़ेंगे, न बाप की याद में रहेंगे। यह बहुत ही विचित्र बाप है ना। उनकी चलन भी अलौकिक है। और कोई कर न सके। उनका पार्ट और कोई को मिल न सके। बाप आकर तुमको इतना ऊँच बनाते हैं। तो उनका कदर भी रखना चाहिए ना। उनकी श्रीमत पर चलना चाहिए; परन्तु माया घड़ी-2 भुला देती है। माया इतनी जबरदस्त है जो अच्छे-2 महारथियों को भी गिरा देती है। बाप कितना धनवान बनाते हैं; परन्तु माया एकदम माथा मूड़ लेती है। माया से बचना है तो ज़रूर बाप को याद करना पड़े। बहुत अच्छे-2 बच्चे हैं जो बाप का बनकर फिर माया के बन जाते हैं। बात मत पूछो। पक्के ट्रेटर बन जाते हैं। माया एकदम नाक से पकड़ लेती है। अक्षर भी है ग्राह ने गज को खाया; परन्तु इसका अर्थ कोई नहीं समझते।

बाप हर बात अच्छी रीत समझाते हैं। कई बच्चे समझते भी हैं; परन्तु नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। कोई को तो ज़रा भी धारणा नहीं होती। बहुत ऊँची पढ़ाई है ना। तो उसकी धारणा कर नहीं सकते। आते भी हैं नहीं। बाप कहेंगे इनके तकदीर में राज-भाग न है। कोई अक है, कोई फूल है। वैराइटी बगीचा है ना। नहीं तो नौकर-चाकर कैसे मिलेंगे। ऐसे भी तो चाहिए ना। राजधानी में तुमको नौकर-चाकर भी चाहिए ना। सारी राजाई यहाँ से बननी है। नौकर-चाकर, चण्डाल आदि सभी मिलेंगे। यह राजधानी स्थापन हो रही है। वण्डर है! बाप तुमको इतना ऊँच बनाते हैं तो ऐसे बाप को याद करते तो प्रेम के आँसू बहनी चाहिए। तुम माला के दाना बनते हो ना। कहते हैं बाबा आप कितने विचित्र हो। कैसे आकर हम पतितों को पावन बनाने पढ़ाते हो। भक्तिमार्ग में भल शिव की पूजा आदि करते हैं; परन्तु समझते थोड़े ही हैं कि यह पतित-पावन है। फिर भी पुकारते रहते हैं हे! पतित-पावन आओ। आकर हमको गुल-2 देवी-देवता बनाओ। बच्चों के फरमान को बाप मानते हैं और फिर कहते हैं बच्चे, पवित्र बनो। तो इस पर भी कितना हंगामा होता है। बाप वण्डरफुल है ना। बच्चों को कहते हैं मुझे याद करो, तो पाप कटे। बाप जानते हैं हम आत्माओं से बात करते हैं। सभी कुछ आत्मा ही करती है। विकर्म आत्मा करती है। आत्मा ही शरीर द्वारा भोगती है। तुम्हारी तो सभा बैठेगी। खास अनन्य बच्चों के लिए। सर्विस लायक बनकर भी फिर ट्रेटर बन जाते हैं। सर्विस करने वाले तो महारथी हुए ना। इसलिए नाम है गज को ग्राह गले से पकड़ खड़ा है। यह तो बाप ही जानते हैं। अभी उनको छुड़ाने की कोशिश कर रहे हैं। नहीं तो माया पूरा खा जावेगी। कल्प-2 ऐसा होता है। माया के चम्बे में आ जाते हैं। बाप को याद करते ही नहीं। बाप का रिगार्ड नहीं रखते। यह तो बाप जानते हैं कैसे माया हप कर लेती है। कई लिखते हैं बाबा हमने हरा लिया। काला मुँह कर लिया। अभी क्षमा करो। अब गिरा और माया का बना। फिर क्षमा काहे की? उनको तो फिर बहुत-2 मेहनत करनी पड़े। माया से बहुत हराते हैं। बाप कहते हैं मेरे पास दान देकर जाओ। फिर वापस नहीं लेना। नहीं तो खलास हो जावेगा। हरिश्चन्द्र का मिसाल है ना। दान दे फिर बहुत खबरदार रहना है। फिर ले लिया तो सौणा दण्ड पड़ जावेगा। फिर बहुत हल्का पद पा लेंगे। बच्चे जानते हैं यह राजधानी स्थापन हो रही है। और जो धर्म स्थापन करते हैं उन्हों की पहले राजाई नहीं चलती है। राजाई तो तब हो जब 50/60 करोड़ हों। तब लश्कर बने। शुरू में तो आते ही हैं एक/दो। फिर वृद्धि को पाते हैं। तुम जानते हो क्राइस्ट भी कोई वेष में आवेंगे। बेगर रूप में। पहला नम्बरवाला ज़रूर फिर लास्ट नम्बर में होगा। क्रिश्चियन लोग झट कहेंगे बरोबर क्राइस्ट इस समय बेगर रूप में है। समझते हैं पुनर्जन्म तो लेना ही है। तमोप्रधान तो ज़रूर हरेक को बनना ही है। इस समय सारी दुनिया तमोप्रधान, जड़–जड़ीभूत है। इस पुरानी दुनिया का विनाश ज़रूर होना है। क्रिश्चियन लोग भी कहेंगे बरोबर क्राइस्ट से 3000 वर्ष पहले हेविन था। फिर ज़रूर होगा। अरविन्दों की माई भी कहती है विनाश होना है; परन्तु फिर क्या होगा, यह बातें समझावें कौन। तुम्हारे में से जब कोई जायें, उनको समझावें। बाप कहते हैं अभी वह अवस्था बच्चों की कहाँ है। घड़ी-2 लिखते हैं हम योग में रह नहीं सकते। बच्चों की एक्टीविटी से बाबा समझ जाते हैं। बाप को समाचार देने से भी डरते हैं। बाप तो बच्चों को कितना प्यार करते हैं। प्यार से नमस्ते करते हैं। इतना प्यार तुमको पढ़ाने वाली ब्राह्मण(ी) भी नहीं कर सकती। उनमें तो बड़ा अहंकार रहता है। हेड्स तो प्यार करना जानती ही नहीं; क्योंकि देहअभिमान बहुत है। अच्छे-2 बच्चों को माया भुला देती है। बाबा समझ सकते हैं। कहते हैं मैं नॉलेजफुल है(हूँ)। जानी-जाननहार का मतलब यह नहीं कि मैं सभी के अन्दर को जानता हूँ। मैं आया हूँ पढ़ाने या रीड करने? मैं किसको रीड नहीं करता। यह (ब्रह्मा) भी रीड नहीं करता। इनको तो सभी कुछ भूलना है। रीड फिर क्या करेंगे। तुम यहाँ आते ही हो पढ़ने। भक्तिमार्ग ही अलग है। यह भी गिरने का उपाय चाहिए ना। इन बातों से ही तुम गिरते हो यह ड्रामा का खेल ही ऐसा बना हुआ है। भक्तिमार्ग के शास्त्र पढ़ते नीचे ही गिरते आए हो। तमोप्रधान बनते गए हो। अभी तुमको इस छी-छी दुनिया {में} बिल्कुल रहना न है। कलियुग से फिर सतयुग आना है। अभी यह है संगमयुग। यह भी बातें धारण करनी हैं।

बाप ही समझाते हैं। बाकी तो सारी दुनिया की बुद्धि पर गॉडरेज़ का ताला लगा हुआ है। तुम समझते हो यह दैवीगुण वाले थे। वही फिर आसुरी गुण वाले बने हैं। बाप समझाते हैं अभी भक्तिमार्ग की बातें सभी भूल जाओ। अभी मैं जो सुनाता हूँ वह सुनो। हियर नो ईविल..... अभी मुझ एक से ही सुनो। अभी मैं तुमको तारने आया हूँ। बाकी यह गुरु लोग सभी डुबोने वाले हैं। कैसे डुबोते हैं, यह भी तुम जानते हो। शादी बरबादी कहा जाता है ना। वह हथियाला बाँधते हैं विख के लिए, तो गोया वह ब्राह्मण हैं डुबोने वाले। वह हैं आसुरी सम्प्रदाय। तुम हो ईश्वरीय सम्प्रदाय। प्रजापिता ब्रह्मा के मुख कमल से तुम पैदा हुए हो ना। इतने सभी एडाप्टेड बच्चे हैं। इनको आदि देव कहा जाता है। महावीर भी कहते हैं। तुम बच्चे महावीर हो ना, जो योगबल से माया पर जीत पहनते हो। बाप को कहा जाता है ज्ञान का सागर। ज्ञान सागर बाप तुमको अविनाशी ज्ञान रत्नों के थाली भरकर देते हैं। तुमको मालामाल बनाते हैं। जो ज्ञान धारण करते हैं वह ऊँच पद पाते हैं। जो धारणा नहीं करते हैं ज़रूर कम पद पावेंगे। बाप से तुम कारून का खज़ाना पाते हो। अल्लाअब्बलदीन की कथा है ना। तुम जानते हो वहाँ हमको कोई अप्राप्त वस्तु नहीं रहता। 21 जन्मों के लिए वर्सा बाप देते हैं। बेहद का बाप बेहद का वर्सा देते हैं। हद के वर्सा मिलते हुए भी बेहद के बाप को ज़रूर याद करते हैं। हे! परम-आत्मा, रहम करो। कृपा करो। यह किसको पता थोड़े ही है वह क्या देने वाला है। अभी तुम समझते हो हमको विश्व का मालिक बनाते हैं। चित्रों में भी ब्रह्मा द्वारा स्थापना..... ब्रह्मा सामने बैठे हैं साधारण। स्थापना करेंगे तो ज़रूर उनको ही बनावेंगे ना। बाप कितना अच्छी रीत समझाते हैं। तुम पूरा समझा नहीं सकते हो। वह(बह) जाता है। भक्तिमार्ग में भी शंकर के आगे कहते हैं भर दो झोली। आत्मा बोलती है हम कंगाल हैं। हमारी झोली भरो। हमको ऐसा बनाओ। अभी तुम झोली भरने आए हो। कहते हैं हम तो नर से नारायण बनेंगे। यह पढ़ाई ही नर से ना॰ बनने की है। पुरानी दुनिया में आने किसकी दिल होगी? परन्तु नई दुनिया में तो सभी नहीं आवेंगे। कोई 25% पुरानी में आवेंगे। कुछ कसर तो पड़ेगी ना। थोड़ा भी किसको मैसेज देते रहेंगे तो स्वर्ग के मालिक ज़रूर बनेंगे। अभी नर्क के मालिक सभी है ना। राजा-रानी-प्रजा, सभी नर्क के मालिक हैं। वहाँ थे डबल सिरताज। अभी वह नहीं हैं। आजकल तो धर्म आदि को कोई जानते ही नहीं। देवी-देवता धर्म ही खत्म हो गया है। गाया जाता है रिलीजन इज़ माइट। धर्म को न जानने का(के) कारण ताकत न रही है। बाप बैठ समझाते हैं मीठे-2 बच्चे तुम ही पूज्य से पुजारी बनते हो। 84 जन्म लेते हो ना। हम सो ब्राह्मण, फिर हम सो क्षत्रिय..... बुद्धि में यह सारा चक्र आता है ना। यह 84 का चक्र हम लगाते ही रहते हैं। अभी फिर वापस घर जाना है। पतित कोई जा नहीं सकता। आत्मा ही पतित अथवा पावन बनती है। सोने में खाद पड़ती है ना। जेवर में नहीं पड़ती। यह है ज्ञान-अग्नि, जिससे सारी खाद निकल तुम पक्का सोना बन जावेंगे। फिर जेवर भी तुमको ऐसा अच्छा मिलेगा। अभी आत्मा पतित है तो पावन के आगे नमन करते हैं। करती तो सभी कुछ आत्मा है ना। अभी बाप समझाते हैं बच्चे सिर्फ मामेकम् याद करो, तो बेड़ा पार हो जाए। पवित्र बन पवित्र दुनिया में चले जावेंगे। अभी जो जितना पुरुषार्थ करेंगे। सभी को यही परिचय देते रहो। वह है हद का बाप। यह है बेहद का बाप। संगम पर ही बाप आते हैं स्वर्ग का वर्सा देने, तो ऐसे बाप को याद करना पड़े ना। टीचर को कब स्टूडेंट भूलते हैं क्या? परन्तु यहाँ माया भुलाती रहेगी। बड़ा खबरदार रहना है, युद्ध का मैदान है ना। बाप कहते हैं अब गटर में मत गिरो। गंदे बन जावेंगे। अभी तो स्वर्ग में चलना है। पवित्र बनकर ही पवित्र नई दुनिया के मालिक बनेंगे। तुमको विश्व की बादशाही देता हूँ कम बात है क्या? सिर्फ यह एक अन्तिम जन्म पवित्र बनो। अभी पवित्र न बनेंगे तो नीचे गिर जावेंगे। टेम्पटेशन बहुत है। काम पर जीत पाने से तुम जगत के मालिक बनेंगे। तुम साफ कह सकते हो– परमपिता परमात्मा ही जगत का गुरु है, जो सारे जगत को सद्गति देते हैं। अच्छा, मीठे-2 रूहानी बच्चों को रूहानी बापदादा का यादप्यार, गुडमॉर्निंग और नमस्ते।